2 गुरु-शिक्षा

कहानी

पाठ चर्चा : प्राचीन समय में हमारे देश में शिक्षा पाने का एकमात्र स्थान था—गुरुकुल। एक राजकुमार कई वर्ष तक गुरुकुल में रहा। वहाँ से शिक्षा ग्रहण कर घर वापस लौटते समय गुरु जी ने राजकुमार को कुछ बुरे-भले शब्द कह दिए। यह जानकर राजा को गुरु जी पर बेहद गुस्सा आया। गुरु जी को गुरुकुल छोड़कर जाना पड़ा। कई वर्ष बाद गुरु जी को यह देखकर खुशी हुई कि उन शब्दों का जो असर वे राजकुमार पर देखना चाहते थे, वही हुआ है। आओ, अब आगे कहानी पढ़कर जानें...।

प्राचीन समय की बात है एक गुरु जी थे जिनका नाम पंडित वृषभान था। वे थे तो बहुत गरीब लेकिन ज्ञान बाँटने वाले गुरु के रूप में उनका बहुत नाम था। उनका एक छोटा-सा आश्रम था। उस आश्रम में बड़े-बड़े लोग भी अपने पुत्रों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजते थे। गुरु जी सभी बच्चों को समान शिक्षा और प्यार देते थे। उनके आश्रम में एक राजकुमार भी पढ़ता था।

कई वर्षों की शिक्षा के बाद गुरु जी ने राजकुमार से कहा, "वत्स, अब तुम्हारी शिक्षा पूर्ण हो गई, तुम चार दिन बाद अपने घर जा सकते हो।"

यह सुनकर राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ। वह सोचने लगा कि कितने वर्षों बाद वह अपने परिवार के लोगों से मिलेगा, उन स्थानों को देखेगा जहाँ खेल-कूदकर उसका बचपन बीता है। इतने दिनों बाद कैसा दिखेगा वह सब कुछ।

राजकुमार ने घर संदेश भेज दिया कि वह अमुक दिन आश्रम से विदा हो रहा है, सवारी भेज दी जाए।

नियत समय पर राजकुमार के लिए राजधानी से रथ आ गया।

सुबह-सुबह राजकुमार गुरु जी से आशीर्वाद माँगने गया। तब गुरु जी ने कहा, "वत्स, खूब फलो-फूलो, सुखी रहो और दूसरों को सुखी रखो।"

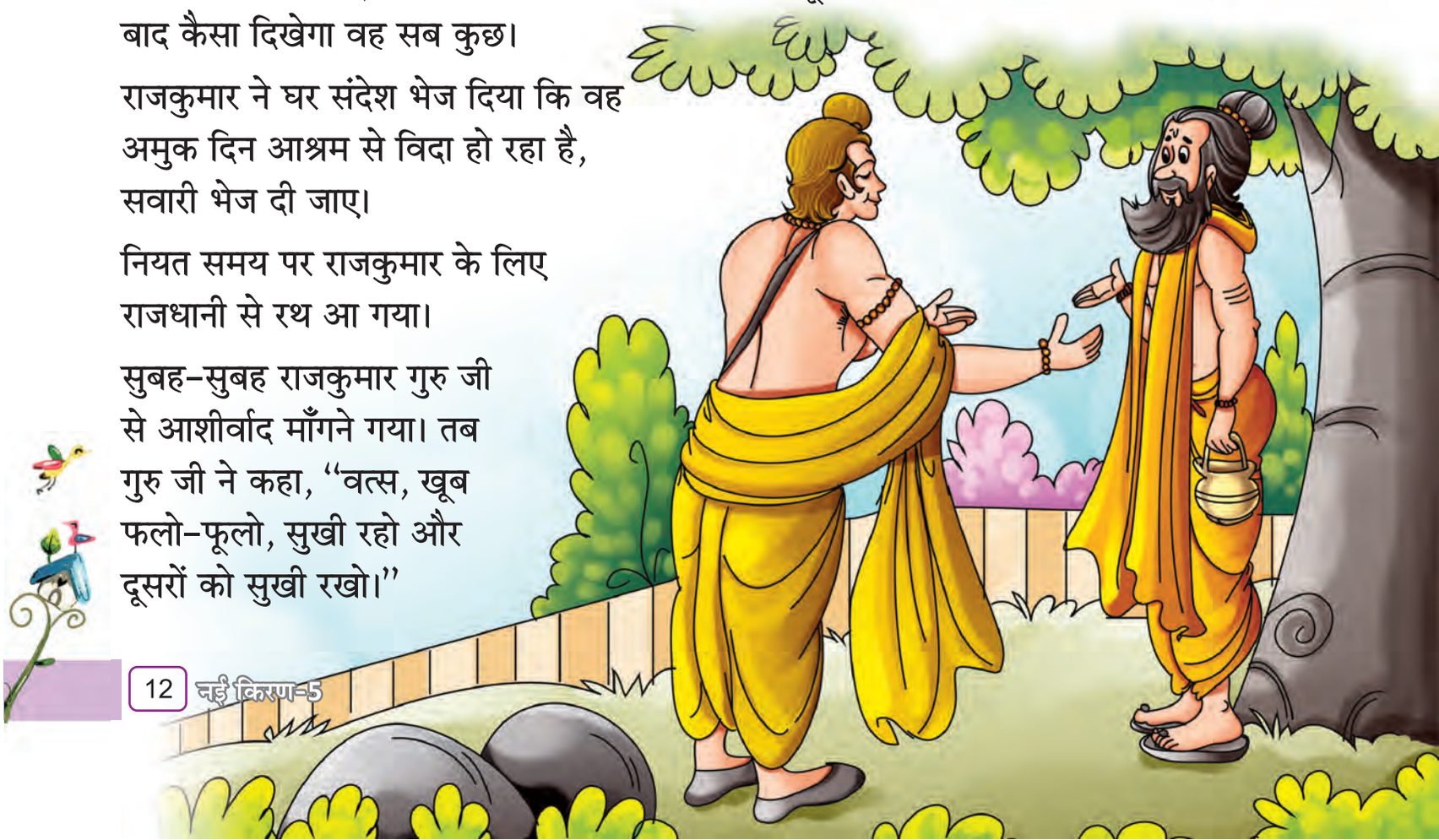

गुरु जी क्षणभर को रुके, फिर कटु शब्द बोलकर राजकुमार को अपमानित किया।

गुरु जी की बातें सुनकर राजकुमार लज्जित हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है! उसने गुरु जी के चेहरे को देखा, वहाँ क्रोध का नामोनिशान नहीं था, चेहरा शांत था।

राजकुमार की रोती आँखों में सवाल—मुझे क्यों अपमानित किया गुरु जी? मैंने क्या अपराध किया था?

राजकुमार की आँखों के सवाल समझकर गुरु जी बोले, "वत्स, इतनी शिक्षा बाकी रह गई थी।"

राजकुमार राजधानी पहुँचा तो राजमहल में चारों ओर खुशी छा गई। जो राज-कर्मचारी राजकुमार को लेने गए थे उनसे यह जानकर राजा को क्रोध आ गया कि आते समय गुरु जी ने राजकुमार को अपमानित किया है!

राजा बोला, "उस दरिद्र पंडित की यह मजाल कि राजकुमार को बेवजह अपमानित किया! जाओ, पकड़ लाओ उस पंडित को, मैं उसे इस गुस्ताखी का मज़ा चखाऊँगा।"

फिर क्या था, सिपाही पंडित वृषभान के आश्रम की ओर दौड़े, लेकिन पंडित जी आश्रम में होते तो मिलते। वे जानते थे कि राजकुमार को अपमानित करने के कारण राजा उन पर बहुत गुस्सा करेगा। पकड़कर उन्हें सरेआम पिटवा देगा इसलिए वे लापता हो गए थे।

जब उन्हें लगा कि अब राजा की उत्तेजना ठंडी पड़ गई होगी, तब वे वेश बदलकर राजदरबार में पहुँच गए।

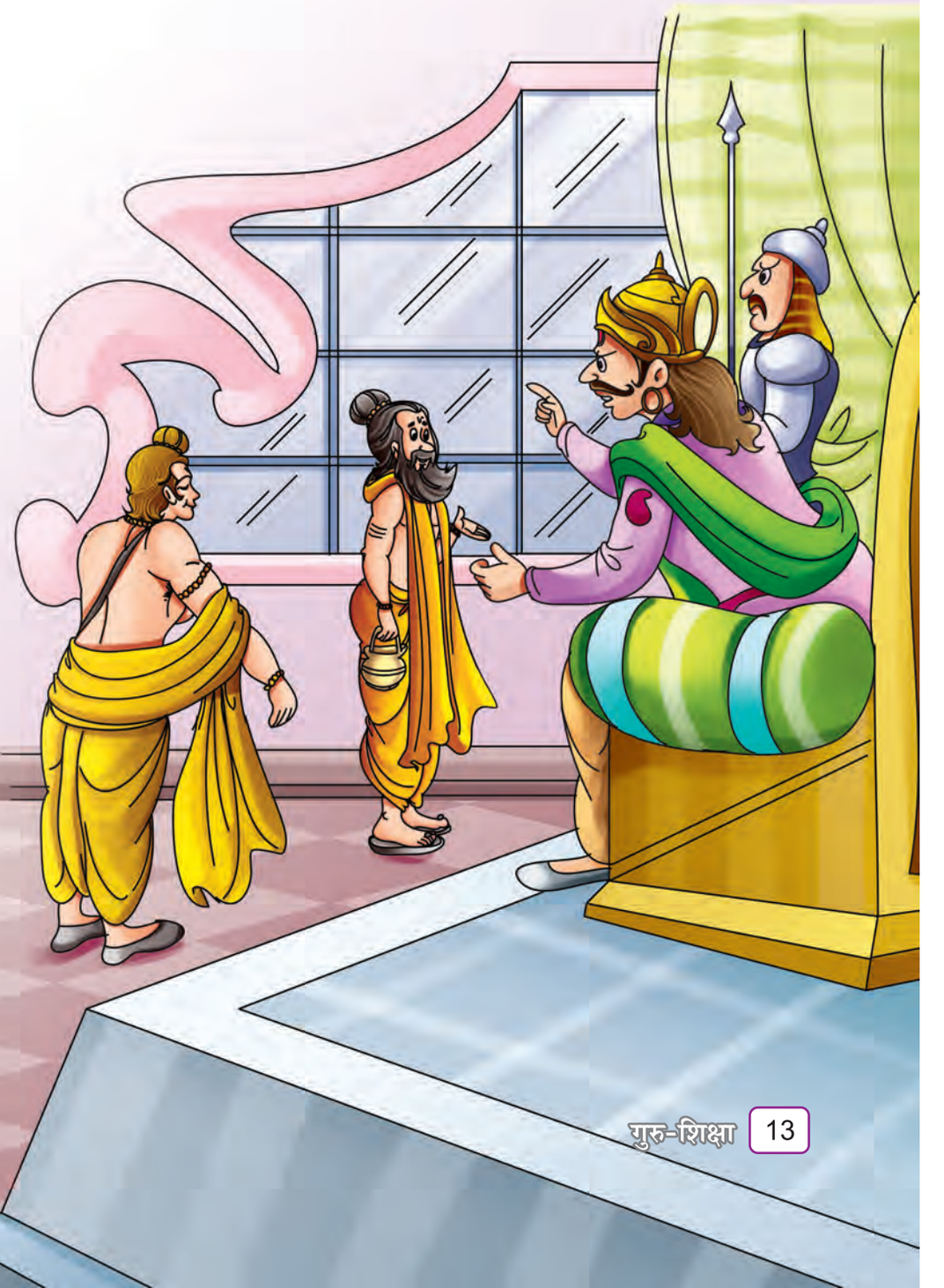

उन्होंने देखा कि एक किसान लगान न देने के जुर्म में लाया गया है और उसे अपमानित किया जा रहा है। पंडित जी ने अनुभव किया कि राजकुमार हर शब्द के साथ खुद थोड़ा सिहर उठता था और जब उससे सहन नहीं हुआ, तब चिल्ला उठा, "बस कीजिए पिताजी, बहुत अपमानित कर चुके हैं।"

पंडित वृषभान ने ताली बजाते हुए कहा, "शाबाश राजकुमार, शाबाश!"

सबने चौंककर पंडित जी की ओर देखा।

राजा ने गुस्से से पूछा, "कौन हैं आप और यह क्या शाबाश-शाबाश लगा रखा है?"

पंडित जी ने अपना नकली वेश उतारते हुए कहा, "मैं पंडित वृषभान हूँ, आपके पुत्र का गुरु।"

राजा हैरानी भरे स्वर में बोला, "अच्छा-अच्छा, तुम हो? तो तुम्हीं ने मेरे पुत्र को अपमानित किया था? तुमने यह हिमाकत क्यों की थी?"

पंडित वृषभान हँसे और बोले, "क्यों की थी? राजकुमार की आज की हरकत देखकर भी पूछ रहे हैं क्यों की थी? आपने मुझे राजकुमार को शिक्षा देने का काम सौंपा था न! मैंने इन्हें शिक्षा दी। अपमानित करना भी उसी शिक्षा का अंग था। मैं जानता था कि राजकुमार कल राजा बनेंगे और प्रजा को दंड देंगे। दंड देते समय उन्हें याद रहे कि अपमान भरे शब्द कितनी तकलीफ़ देते हैं, इसलिए मैंने उन्हें इस तकलीफ़ का अनुभव कराया था। राजा बनने से बड़ा होता है मनुष्य बनना, जो दूसरों के दर्द को समझता हो।"

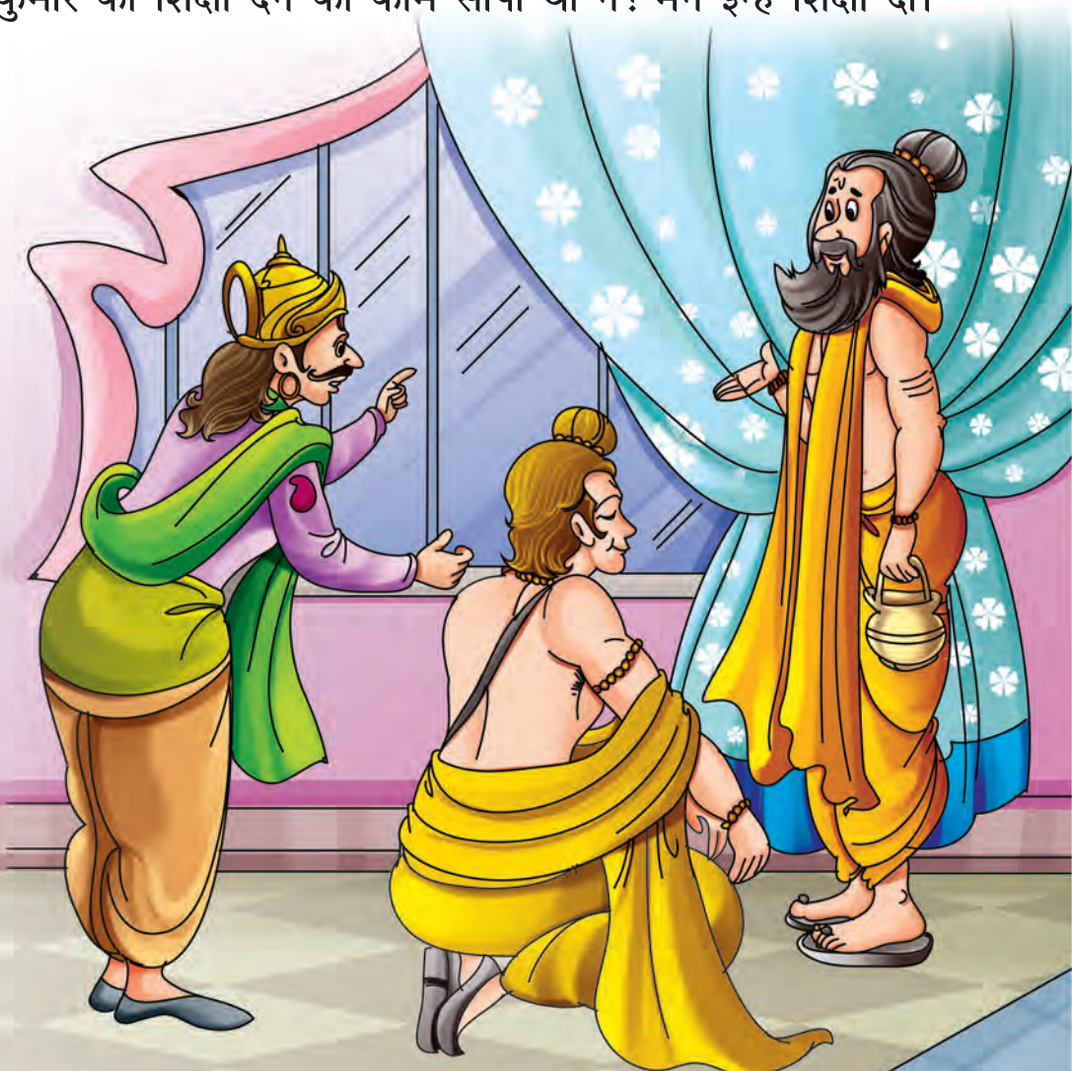

राजा जब तक कुछ कहते, राजकुमार आगे बढ़कर गुरु जी के चरणों में बैठ गया। फिर पश्चाताप-सा करते हुए बोला, "क्षमा कीजिए गुरुदेव, आपकी

शिक्षा के रहस्य को न मैं समझ पाया, न मेरे पिता। आपने दूसरों की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझने की जो शिक्षा मुझे दी थी, आज मैंने उसका अनुभव कर लिया। आप धन्य हैं गुरुदेव!"

—रामदरश मिश्र

शब्दार्थ

भेद — अंतर; **वत्स** — बेटा, पुत्र; **संदेश** — समाचार, खबर; **नियत** — निश्चित; **कटु** — कड़वे; **अपमानित** — लज्जित; **दरिद्र** — गरीब; **बेवजह** — बिना किसी कारण के; **गुस्ताखी** — भूल; **सरेआम** — सबके सामने; **लापता** — गायब; **उत्तेजना** — जोश, भावावेश; **ज़ुर्म** — अपराध; **सिहर** — कंपन; **हरकत** — व्यवहार; **तकलीफ़** — कष्ट; **हिमाकत** — अपनी हद से बढ़कर कुछ करना; **पश्चाताप** — पछतावा; **रहस्य** — राज़

श्रुतलेख : वृषभान आश्रम वत्स आशीर्वाद दरिद्र पश्चाताप

अभ्यास

मौखिक कार्य.....

❖ **उत्तर बताओ :**

क. बच्चों के साथ गुरु जी का कैसा व्यवहार था?

ख. घर जाने की बात सुनकर राजकुमार क्या सोचने लगा?

ग. किसान को दंड क्यों दिया जा रहा था?

लिखित कार्य.....

1. दिए गए प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखो :

क. गुरु के रूप में पंडित वृषभान का व्यवहार कैसा था और क्यों?

ख. राजकुमार को कटु शब्द कहकर अपमानित करने के पीछे गुरु जी की क्या इच्छा थी?

ग. राजकुमार को अपमानित किए जाने की बात सुनकर राजा की क्या प्रतिक्रिया हुई?

घ. अंत में राजकुमार को किस बात का पछतावा हुआ?

2. सही उत्तर के सामने ✓ चिह्न लगाओ :

क. गुरु जी बच्चों में किस तरह का भेद नहीं करते थे?

(i) छोटे–बड़े घरों का ☐ (ii) राजाओं के ☐ (iii) ऋषियों के ☐

ख. राजकुमार गुरु जी से क्या माँगने गया?

(i) आज्ञा ☐ (ii) आशीर्वाद ☐ (iii) पुस्तक ☐

ग. गुरु जी ने राजकुमार को किससे अपमानित किया?

(i) कोड़े से ☐ (ii) तलवार से ☐ (iii) शब्दों से ☐

घ. गुरु जी ने कटु शब्द बोलकर राजकुमार को क्या अनुभव करना सिखाया था?

(i) दूसरों की तकलीफ़ ☐ (ii) खुशी ☐ (iii) गुस्सा ☐

3. आशय स्पष्ट करके लिखो :

क. "वत्स, इतनी शिक्षा बाकी रह गई थी।"

ख. "राजा बनने से बड़ा है मनुष्य बनना, जो दूसरों के दर्द को समझता हो।"

4. पाठांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखो :

फिर क्या था, सिपाही पंडित वृषभान के आश्रम की ओर दौड़े, लेकिन पंडित जी आश्रम में होते तो मिलते। वे जानते थे कि राजकुमार को अपमानित करने के कारण राजा उन पर बहुत गुस्सा करेगा। पकड़कर उन्हें सरेआम पिटवा देगा इसलिए वे लापता हो गए थे।

जब उन्हें लगा कि अब राजा की उत्तेजना ठंडी पड़ गई होगी, तब वे वेश बदलकर राजदरबार में पहुँच गए।

क. पंडित वृषभान के आश्रम की ओर कौन दौड़े और क्यों?

.....

ख. पंडित वृषभान आश्रम से क्यों लापता हो गए थे?

.....

.....

ग. पंडित वृषभान राजदरबार कब और कैसे पहुँचे?

.....

.....

भाषा की बात.....

1. वाक्यों में प्रयुक्त रंगीन शब्दों के विलोम लिखकर वाक्य पूरे करो :

क. जीवन में सुख और ..... आते ही रहते हैं।

ख. हमें गरीब और ..... सबका सम्मान करना चाहिए।

ग. गलती होने पर दंड और अच्छे काम पर ..... दिया जाता है।

घ. वे स्वयं को ज्ञानी कहते थे और ..... जैसे काम करते थे।

ङ. बुराई को ..... में बदलते देर नहीं लगती।

2. रेखांकित शब्दों के बहुवचन लिखकर वाक्य को दोबारा लिखो :

क. राजा ने अपने पुत्र को शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा।

राजा ने अपने पुत्रों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा।.....

ख. मैंने राजकुमार को पढ़ाया।

.....

ग. किसान पर लगान न देने का आरोप लगा।

.....

घ. मैं जानता था कि राजकुमार कल राजा बनेगा।

.....

ङ. उसने चौंककर पंडित को देखा।

.....

3. निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरित करके लिखो :

क. आपने मुझे मारा गुरु जी। ('क्यों' लगाकर)

.....

ख. मैं भी राजा बनना चाहता हूँ। ('काश' का प्रयोग कर)

.....

ग. तुमने अच्छा काम किया राजकुमार। ('शाबाश' लगाकर)

.....

घ. पंडित जी को देखते ही पकड़ लो। ('जैसे-वैसे' का प्रयोग कर)

.....

4. दिए गए शब्दों के दो-दो समानार्थी शब्द लिखो :

क. गुरु > ....

ख. सुबह > ....

ग. आँख > ....

घ. बेटा > ....

ङ. राजा > ....

विचार-कौशल.....

1. आपके अनुसार एक आदर्श शिक्षक कैसा होना चाहिए? सोचकर अपने विचार लिखो।

.....

.....

.....

.....

2. क्या विद्यालयों में दंड का विधान होना चाहिए? सोचकर लिखो।

.....

.....

.....

रचनात्मक कार्य.....

1. किसी एक शीर्षक पर एक अनुच्छेद लिखो :

क. मेरे प्रिय अध्यापक/अध्यापिका

ख. जब मैं मैडम/सर से नाराज़ हुआ

2. अपने विद्यालय की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए विदेश में रह रहे अपने मित्र को पत्र लिखो।